International Journal of Applied Research 2017; 3(7): 137-141

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(7): 137-141
www.allresearchjournal.com
Received: 20-05-2017
Accepted: 21-06-2017

डॉ.कविता मित्तल
प्रोफेसर, शिक्षा संकाय,
वनस्थली विद्यापीठ, टोंक,
राजस्थान, भारत

यतेन्द्र कुमारी
शोधछात्रा, शिक्षा संकाय,
वनस्थली विद्यापीठ, टोंक,
राजस्थान, भारत

Correspondence
डॉ. कविता मित्तल
प्रोफेसर, शिक्षा संकाय,
वनस्थली विद्यापीठ, टोंक,
राजस्थान, भारत

उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की जीवनशैली का अध्ययन

डॉ. कविता मित्तल, यतेन्द्र कुमारी

सारांश
भारत में लगातार किशोरों की जीवनशैली बदलती दुनिया के साथ–साथ नया मोड़ ले रही है। वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण तथा पश्चिमीकरण समाज की आवश्यकताओं को बदल रहे हैं, जिससे जागरूक होकर युवा पीढ़ी और अधिक महत्वाकांक्षी बन रही है, जिसका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव किशोरों की जीवनशैली पर पड़ रहा है। एक व्यक्ति जिस तरह से जीवन जीता है, उसका सीधा प्रभाव उसकी योग्यताओं एवं क्षमताओं पर पड़ता है जिसके आधार पर ही वह जीवन में सफलता व संतुष्टि प्राप्त करता है। अक्सर देखा जाता है कि विद्यार्थी जिस प्रकार की शैली को अपनाता है वह उसकी संस्कृति, लिंग, पारिवारिकव पर्यावरण आदि से प्रभावित होती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की जीवनशैली के विभिन्न पक्षों जैसे– स्वास्थ्य संबंधी जीवनशैली, शैक्षिक उन्मुख जीवनशैली, करियर उन्मुख जीवनशैली, सामाजिक उन्मुख जीवनशैली, चलन संबंधी जीवनशैली व परिवार उन्मुख जीवनशैली का उनके विषयवर्ग भिन्नता के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में युवा विद्यार्थियों की बदलती जीवन शैली को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

कुट शब्दः जीवनशैली, स्वास्थ्य संबंधी जीवनशैली, शैक्षिक उन्मुख जीवनशैली, करियर उन्मुख जीवनशैली, सामाजिक उन्मुख जीवनशैली आदि।

प्रस्तावना
जीवन की परिस्थितियाँ, आवश्यकताएँ व प्राथमिकताएँ सदैव परिवर्तित होती रहती है और यह परिवर्तन प्रत्येक अवस्था पर लागू होता है, जिसमें सर्वाधिक संवेदनशील कही जाने वाली किशोरावस्था के लिए परिवर्तन की प्रक्रिया अत्यन्त प्रभावपूर्ण होती है। परिवर्तन की प्रक्रिया किशोरों की आवश्यकताओं व प्राथमिकताओं दोनों में बदलाव लाती है जैसे आज से दो दशक पूर्व किशोर संवाद के लिए प्रत्यक्ष मुलाकात का उपयोग करते थे परन्तु अब इसका स्थान सोशियल नेटवर्किंग वेबसाइट्स ने ले लिया है इतना ही नहीं वर्तमान में किशोर परिवार में रहते हुए अपने अभिभावकों से भी संवाद हेतु मोबाईल को प्रयुक्त करते हैं। उनके व्यवहार, आदतें व दृष्टिकोण सामाजिक परिवर्तनों के कारण रूपान्तरित हो रहे हैं। आज किशोरों को भी युवाओं का दर्जा दिया जा रहा है जिससे उनकी भूमिकाओं में कुछ परिवर्तन अवश्य आ रहे है। ऐसे में उनके जीवन जीने के ढंग में परिवर्तन महसूस किया जा सकता है।
साधारण शब्दों में बालक क्या खाता है ? क्या पहनता है ? क्या खेलता है? किनके साथ रहता है ? कब, कितना व कैसे पढ़ता है ? उसकी क्या आदतें हैं? उसकी पसंद–नापसंद क्या हैं एवं इनके प्रति उसके विचार क्या हैं ? ये सभी बातें बालक की जीवन शैली को दर्शाते हैं।
जीवनशैली शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग प्रसिद्ध ऑस्ट्रियन मनोविश्लेषणवादी मनोवैज्ञानिक अल्फ्रेड ऐडलर (1870–1937) द्वारा किया गया। जीवनशैली अंग्रेजी के दो शब्दों Life तथा Style से मिलकर बना है। जिसका अर्थ होता है जीवन को आगे बढ़ाना ('Way' one leads his/her life)

विकीपीडिया के अनुसारः ''जीवनशैली किसी भी व्यक्ति, समूह या संस्कृति के जीवन की एक जटिल विधि है।''

Dictionary Reference.comके अनुसारः ''आदतें, दृष्टिकोण, पसंद, नैतिक–मूल्य, आर्थिक स्तर आदि मिलकर किसी व्यक्ति या समूह की जीवनशैली का निर्माण करते हैं।''

Business Dictionary.com के अनुसारः ''किसी भी व्यक्ति, परिवार तथा समाज के रहने या जीवन जीने का वह ढंग जिसमें वह अपने शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा आर्थिक वातावरण के

साथ दैनिक आधार पर समन्वय (Coping) स्थापित करने की कोशिश करता है, जीवनशैली कहलाता है।''

अतः कहा जा सकता है कि जीवनशैली में वैचारिक एवं व्यावहारिक पक्ष सम्मिलित होते हैं, जिसमें सदैव नए–नए व्यवहार जुड़ते रहते हैं तथा इनमें से कुछ आगे चलकर व्यक्ति की आदत बनते हैं। किसी समय विशेष पर ये व्यक्ति के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन जाते हैं। व्यावहारिक परिवर्तन व्यक्ति के विचारों के साथ–साथ उसकी पसंद, प्राथमिकताओं तथा आदतों को देखकर आसानी से पहचाने जा सकते हैं।

विज्ञान, एक विषय के रूप में विद्यार्थियों में तार्किक क्षमता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अभिवृत्ति एवं सोच को उत्पन्न करता है तथा विद्यार्थियों में अनुभव व तथ्यों के आधार पर निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाता है, वहीं कला, एक विषय के रूप में भावनाओं एवं संवेगों को प्रकट करने में सहायता करता है तथा सामाजिक स्थितियों के प्रति अधिक सजग बनाता है। कला विषय विद्यार्थियों में कलात्मकता एवं रचनात्मकता को उजागर करता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि अलग–अलग विषय वर्ग के विद्यार्थियों की जीवनशैली में भिन्नता होती है?

शोधकर्त्री द्वारा जीवनशैली से संबंधित शोध साहित्य का अवलोकन किया गया –

वानी एम. व लक्ष्मी डी (2013) [5]; ''अ क्रोसकल्चरल लाइफस्टाइल ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट्स'' विषय पर शोध किया। इस अध्ययन के उद्देश्य थे कॉलेज जाने वाले विद्यार्थियों की जीवनशैली के बारे में अध्ययन करना, क्षेत्र व लिंग के आधार पर जीवनशैली का अध्ययन करना। न्यादर्श के रूप में पश्चिम बंगाल व छत्तीसगढ़ में कॉलेज जाने वाले 160 विद्यार्थियों का चयन किया गया। विद्यार्थियों की जीवनशैली का अध्ययन करने हेतु लाइफ स्टाइल स्केल टेस्ट का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि छत्तीसगढ़ में रहने वाले कॉलेज विद्यार्थियों की जीवनशैली प. बंगाल के विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर थी तथा शहरी लड़कियों की ग्रामीण लड़कियों व शहरी व ग्रामीण लड़कों से बेहतर जीवन शैली पाई गई।

ओमर अब्द एल–कदर, मारवा एवं आतिया मोहम्मद, फातिया (2013) [2]; ''द रिलेशनशिप बिटवीन लाइफ स्टाइल, जनरल हैल्थ एण्ड एकेडमिक स्कोर्स ऑफ नर्सिंग स्टूडेंट्स'' नामक अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य थे – नर्सिंग विद्यार्थी में स्वस्थ व अस्वस्थ आदतों का पता लगाना, विद्यार्थियों की अस्वस्थ आदतों का सामान्य स्वास्थ्य पर प्रभाव देखना व सामान्य स्वास्थ्य का अकादमिक अंकों पर प्रभाव देखना। न्यादर्श के रूप में 150 विद्यार्थी लिए गए। जाँच हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली व एन्थ्रोपोमेट्रिक मेजरमेंट का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि स्वास्थ्य स्तर, स्वास्थ्य आदतों व अकादमिक अंकों के मध्य सकारात्मक संबंध था। विद्यार्थियों की अस्वस्थ आदतों का उनके स्वास्थ्य व अकादमिक अंकों पर भी प्रभाव पाया गया।

पंकज एस. सुवेरा व सुनील एस. जादव (2014) [3]; ''अ कम्परेटिव स्टडी ऑफ द लाइफ स्टाइल अमंग अरबन एण्ड रूरल एजुकेटेड अनअम्लाइड प्युपिल'' नामक शोध अध्ययन का उद्देश्य था – ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के शिक्षित बेरोजगारों की जीवनशैली की तुलना करना। न्यादर्श के रूप में 100 ग्रामीण शिक्षित बेरोजगार व 100 शहरी शिक्षित बेरोजगारों को लिया गया। अध्ययन का क्षेत्र गुजरात में बनास्कंथा जिला था। आंकड़े एकत्रित करने हेतु डाटाशीट व लाइफ स्टाइल स्केल (एस. के. बावा एवं एस. कौर द्वारा निर्मित) का प्रयोग किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण एफ. परीक्षण द्वारा किया गया। निष्कर्ष में पाया कि शिक्षित बेरोजगारों की जीवनशैली पर क्षेत्र व लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

समस्या कथनः उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की जीवनशैली का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्यः उच्च माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की जीवनशैली का विषयवर्ग भिन्नता के आधार पर अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की स्वास्थ्य केन्द्रित जीवनशैली में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अकादमिक उन्मुख जीवनशैली में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की करियर उन्मुख जीवनशैली में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक उन्मुख जीवनशैली में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
5. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की चलन सम्बन्धी जीवनशैली में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
6. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की परिवार उन्मुख जीवनशैली में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन के चरः प्रस्तुत शोध अध्ययन के चर हैं –

1. स्वतंत्र चर – जीवनशैली
2. मध्यस्थचर –विषयवर्ग

संक्रियात्मक परिभाषाएं–जीवनशैली (Life Style): ऑक्सफोड डिक्शनरी के अनुसार ''किसी व्यक्ति या समूह का अपने दृष्टिकोण, पसंद व मूल्यों के अनुसार व्यवहार करना व जीवन को संचालित करना ही जीवनशैली कहलाती है।''

प्रस्तुत अध्ययन में जीवनशैली का तात्पर्य विद्यार्थियों में पाई जाने वाली स्वास्थ्य केन्द्रित जीवनशैली, अकादमिक केन्द्रित जीवनशैली, परिवार उन्मुख जीवनशैली, चलन सम्बन्धी जीवनशैली, समाज उन्मुख जीवनशैली व करियर उन्मुख जीवनशैली से लिया गया है, जिसका सम्बन्ध उनकी आदतों, पसन्द–नापसन्दों, विचारों, दृष्टिकोणों व क्रियाओं से है जो उनके दिन–प्रतिदिन के जीवन व व्यवहार में परिलक्षित होते है।

उच्च माध्यमिक स्तरः प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के अंतर्गत सी.बी.एस.ई. से संबंधित विद्यालयों में कक्षा 12वीं के नियमित रूप (Regular Students) से अध्ययनरत विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।

अनुसंधान विधिः समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखकर सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया ।

जनसंख्याः प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या के रूप में राजस्थान के जयपुर जिले को लिया गया है।

न्यादर्शः प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा जयपुर संभाग के जयपुर जिले के सी.बी.एस.ई से सम्बन्धित 18 उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों को यादृच्छिक विधि से चुनागया। चयनित विद्यालयों के कक्षा 12 के कुल 560 विद्यार्थियों (260 कलावर्ग व 300 विज्ञानवर्ग) को न्यादर्श के लिए लिया गया है।

प्रदत्तों के स्रोतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्तों के प्राथमिक स्रोत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी हैं।

शोध उपकरणः प्रदत्त संकलन करने हेतु शोधकर्त्री द्वारा लाइफ स्टाइल स्केल (एस.के. बाबा एवं एस. कौर, 2010) शोध उपकरण को प्रयुक्त किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण प्रक्रियाः प्रदत्तों की प्रकृति एवं अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर प्रदत्तों को विश्लेषित करने हेतु शोधकर्त्री द्वारा मध्यमान, मानक विचलन व टी–परीक्षण सांख्यिकी का उपयोग किया गया।

तालिका 1.1: स्वास्थ्य केन्द्रित जीवनशैली के प्रति विषयवर्ग वार विश्लेषण

विषयवर्ग	N	M	S. D.	't' Value	Table Value	Level of Significance
कला	260	24.00	5.19	.094	0.01-2.59	NS
विज्ञान	300	24.04	5.79		0.05-1.96	
df = 558						

तालिका 1.1 तालिका से ज्ञात होता है उच्च माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान 24.00 व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान 24.04 है। कलावर्गव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का प्रमापिक विचलन क्रमशः 5.19 व 5.79 है। दोनों प्राप्त मध्यमानों की सार्थकता जांच करने पर टी मूल्य .094 प्राप्त हुआ है। 0.01 स्तर पर सारणी मूल्य 2.59 है व 0.05 पर 1.96 है। तालिका के अनुसार प्राप्त मूल्य .094 है जो 0.01 व 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य से कम है। अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की स्वास्थ्य केन्द्रित जीवनशैली में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। दोनों वर्ग के विद्यार्थियों में विषयवर्ग सन्दर्भ में स्वास्थ्य सम्बन्धी आदतें, व्यवहार, विचार व पसन्द–नापसन्द लगभग एक समान है।

अतः परिकल्पना संख्या 2.1 ''उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कलावर्गव विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की स्वास्थ्य केन्द्रित जीवनशैली में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' स्वीकार की जाती है।

तालिका 1.2: अकादमिक उन्मुख जीवनशैली के प्रति विषयवर्ग वार विश्लेषण

विषयवर्ग	N	M	S. D.	't' Value	Table Value	Level of Significance
कला	260	22.61	5.16	2.31	0.01-2.59	Sig. at 0.05
विज्ञान	300	23.61	5.09		0.05-1.96	
df = 558						

1.2 तालिका से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उन्मुख जीवनशैली का मध्यमान 22. 61 व प्रमाप विचलन 5.16 तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अकादमिक उन्मुख जीवनशैली का मध्यमान 23.61 व प्रमाप विचलन 5.09 है। दोनों मध्यमानों के अंतर की सार्थकता का टी मूल्य 2.31 प्राप्त हुआ है। टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 2. 59 है तथा 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 1.96 है। तालिका के अनुसार प्राप्त टी मूल्य 2.31 है जो टी के 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य से अधिक है। अतः उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियो की शैक्षिक उन्मुख जीवनशैली में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः कहा जा सकता है कि कला वर्ग की तुलना में विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियो में शैक्षिक उन्मुख जीवनशैली अधिक पायी गयी है।

अतः परिकल्पना संख्या 2.2 ''उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की अकादमिक उन्मुख जीवनशैली में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' स्वीकार नहीं की जाती है।

तालिका 1.3: करियर उन्मुख जीवनशैली के प्रति विषयवर्ग वार विश्लेषण

विषयवर्ग	N	M	S. D.	't' Value	Table Value	Level of Significance
कला	260	25.23	5.52	1.88	0.01-2.59	NS
विज्ञान	300	26.10	5.42		0.05-1.96	
df = 558						

तालिका संख्या 1.3 से विदित होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग के विद्यार्थियों की करियर उन्मुख जीवनशैली का मध्यमान 25.23 व प्रमाप विचलन 5.52 तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान 26.10 व प्रमाप विचलन 5. 42 है। दोनों मध्यमानों के मध्य अंतर की सार्थकता की जाँच करने पर टी मूल्य 1.88 प्राप्त हुआ। df 558 पर टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 2.59 है तथा 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 1. 96 है जो तालिका के अनुसार प्राप्त टी मूल्य से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर कला वर्ग व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की करियर उन्मुख जीवनशैली के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

अतः परिकल्पना संख्या 2.3 ''उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की करियर उन्मुख जीवनशैली में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' स्वीकार की जाती है।

तालिका 1.4: सामाजिक उन्मुख जीवनशैली के प्रति विषयवर्ग वार विश्लेषण

विषयवर्ग	N	M	S. D.	't' Value	Table Value	Level of Significance
कला	260	21.57	4.71	.453	0.01-2.59	NS
विज्ञान	300	21.40	4.36		0.05-1.96	
df = 558						

तालिका संख्या 1.4 से विदित होता है कि कला वर्ग के विद्यार्थियो की सामाजिक उन्मुख जीवनशैली का मध्यमान 21.57 है वहीं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक उन्मुख जीवनशैली का मध्यमान 21.40 है। कला वर्ग के विद्यार्थियों का

प्रमाप विचलन 4.71 है तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का प्रमाप विचलन 4.36 है दोनों मध्यमानों के मध्य अंतर की सार्थकता जाँच के पश्चात् टी मूल्य .453 प्राप्त हुआ है जो 0.01 तथा 0.05 दोनों स्तर पर सारणी मूल्य से कम है। अतः उच्च माध्यमिक स्तरीय कला वर्ग व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक उन्मुख जीवनशैली के बीच सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना संख्या 2.4 ''उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक उन्मुख जीवनशैली में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' स्वीकार की जाती है।

तालिका 1.5: चलन सम्बन्धी जीवनशैली के प्रति विषयवर्ग वार विश्लेषण

विषयवर्ग	N	M	S. D.	't' Value	Table Value	Level of Significance
कला विज्ञान	260 300	22.13 20.54	6.39 6.22	2.98	0.01-2.59 0.05-1.96	Sig. at 0.01
df = 558						

तालिका संख्या 1.5 से स्पष्ट होता है कि कला वर्ग व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की चलन संबंधी जीवनशैली का मध्यमान क्रमशः 22.13 व 20.54 है। वहीं प्रमापिक विचलन क्रमशः 6.39 व 6.22 है। मध्यमानों के मध्य भिन्नता की सार्थकता जाँच द्वारा टी मूल्य 2.98 प्राप्त हुआ। अतः स्पष्ट है कि प्राप्त टी मूल्य 0.01 तथा 0. 05 दोनों स्तरों पर सारणी मूल्य से अधिक है। जिससे कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् कला वर्ग व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की चलन संबंधी जीवनशैली के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः कहा जा सकता है कि विज्ञान वर्ग की तुलना में कला वर्ग के विद्यार्थियो में चलन संबंधी जीवनशैली अधिक पायी गयी है।

अतः परिकल्पना संख्या 2.5 ''उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की चलन सम्बन्धी जीवनशैली में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' स्वीकार नहीं की जाती है।

तालिका 1.6: परिवार उन्मुख जीवनशैली के प्रति विषयवर्ग वार विश्लेषण

विषयवर्ग	N	M	S. D.	't' Value	Table Value	Level of Significance
कला विज्ञान	260 300	33.23 33.32	6.05 6.24	.185	0.01-2.59 0.05-1.96	NS
df = 558						

तालिका संख्या 1.6 से ज्ञात होता है कि उच्च माध्यमिक स्तरीय कला वर्ग के विद्यार्थियों की परिवार उन्मुख जीवनशैली का माध्य 33.23 व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का माध्य 33.32 है। वहीं कला वर्ग व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का प्रमाप विचलन क्रमशः 6.05 व 6.24 है। दोनों माध्यों के अंतर की सार्थकता जाँच करने पर टी मूल्य .185 प्राप्त हुआ जो 0.01 तथा 0.05 स्तर पर सारणी मूल्यसे कम है। अतः कहा जा सकता है कि कला वर्ग व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की परिवार उन्मुख जीवनशैली के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

अतः परिकल्पना संख्या 2.6 ''उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला वर्ग व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की परिवार उन्मुख जीवनशैली में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' स्वीकार की जाती है।

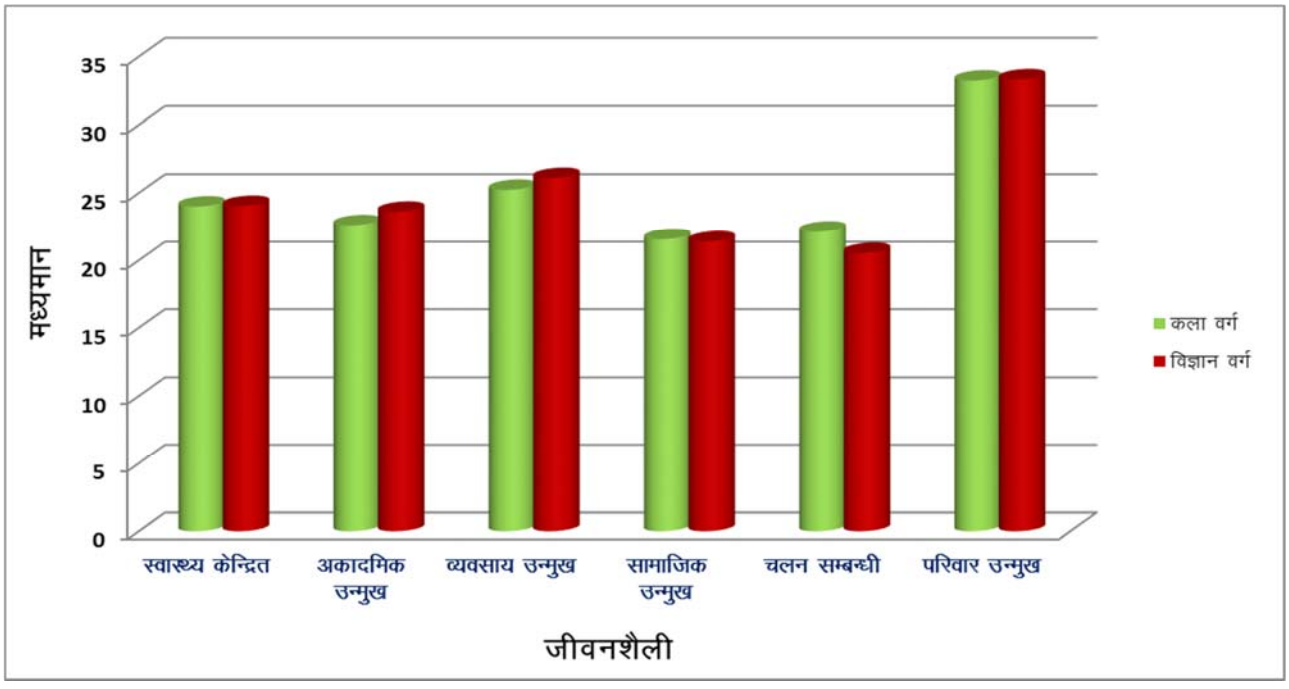

आरेख चित्र 1: उच्च माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों का जीवनशैली के विभिन्न आयामों पर विषयवर्ग वार मध्यमान

निष्कर्ष

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की स्वास्थ्य केन्द्रित जीवनशैली के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियो की शैक्षिक उन्मुख जीवनशैली के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की करियर उन्मुख जीवनशैली के मध्य सार्थक सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
4. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक उन्मुख जीवनशैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
5. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की चलन संबंधी जीवनशैली के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया है।
6. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की परिवार उन्मुख जीवनशैली के मध्य सार्थक भिन्नता नहीं पायी गयी।

उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी अकादमिक रूप से अधिक उन्मुख पाये गये। इसी प्रकार कला वर्ग के विद्यार्थियों को भी अकादमिक रूप से उन्मुख बनाया जाना चाहिए। इसके लिए कला क्षेत्र में अधिक व्यवसायों को सम्मिलित किया जाना चाहिए। इसी के साथ कला वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

कला वर्ग के विद्यार्थी अपेक्षाकृत अधिक ज्तमदकल पाये गये। परंतु यहाँ पर यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि संभवतः जिस प्रकार विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी किसी भी Fashion को ज्यों का त्यों न अपनाकर, सोच–विचार कर अपनाते है, इसी प्रकार कला वर्ग के विद्यार्थियों को भी किसी भी थैपवद को सहजता से न अपनाकर Fashion and Trend के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. मेक–मिलियन, एच.जे.एवं, शूमेकर. रिसर्च इन एजूकेशन. हार्पर कोलिंग पब्लिशर्स, यू.एस.ए., 1989।
2. ओमर अब्द एल–कदर, मारवा एवं आतिया मोहम्मद, फातिया (2013). द रिलेशनशिप बिटवीन लाइफ स्टाइल, जनरल हैल्थ एण्ड एकेडमिक स्कोर्स ऑफ नर्सिंग स्टूडेंट्स Retrived from http://article.sapub.org/10.5923.j. phr.20130303.05.html 11 sept. 2014
3. पंकज एस. सुवेरा व सुनील एस. जादव (2014). अ कम्परेटिव स्टडी ऑफ द लाइफ स्टाइल अमंग अरबन एण्ड रूरल एजुकेटेड अनअम्प्लाइड प्युपिल Retrived from http://www.indianjournals.com/ijor.aspx?target= ijor:ajrbem&volume=4&issue=5&article=031 06 feb. 2016.
4. साबू, एस. (2012). ऐनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशन. नई दिल्लीः ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन।
5. वानी, एम., लक्ष्मी डी. अ क्रॉसकल्चरल स्टडी ऑफ लाइफस्टाइल ऑफ कालेज स्टूडेंट्स जरनल ऑफ कम्यूनिटी गाइडैंस एण्ड रिसर्च. 2013; 30(2).